विचार बिन्दु

विश्व में अग्रणी भूमिका निभाने की आकांक्षा रखने वाला कोई भी देश शुद्ध या दीर्घकालीन अनुसंधान की उपेक्षा नहीं कर सकता।

–होमी भाभा

प्राणी जीवन की रक्षा हेतु प्रकृति की रक्षा आवश्यक

प्रकृति का संरक्षण हमारे सुनहरे भविष्य का आधार है। मनुष्य जन्म से ही प्रकृति और पर्यावरण के सम्पर्क में आ जाता है। प्राणी जीवन की रक्षा हेतु प्रकृति की रक्षा अति आवश्यक है। वर्तमान समय में विभिन्न प्रजाति के जीव-जंतु, वनस्पतियां और पेड़-पौधे विलुप्त हो रहे हैं जो प्रकृति के संतुलन के लिए बहुत ही भयावह है। मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समय समय पर प्रकृति का दोहन करता चला आ रहा है। अगर प्रकृति के साथ खिलवाड होता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब हमें शुद्ध पानी, हवा, उपजाऊ भूमि, शुद्ध पर्यावरण वातवरण एवं शुद्ध वनस्पतियाँ नहीं मिल सकेंगी। इन सबके बिना हमारा जीवन जीना मुश्किल हो जायेगा। प्रकृति हमारे जीवन का आधार है। विभिन्न प्राकृतिक संसाधन जैसे कि जल, वन्यजीवन, वन, खेती, वायु आदि हमारी जरूरतों को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हमारी सांसें जल से भरी हुई हैं और हमारी खाद्य आपूर्ति भी खेती द्वारा उत्पन्न होती है। इसलिए, हमें प्रकृति के साथ संतुलन बनाए रखने की जरूरत है ताकि हम समृद्धि और सुख-शांति के साथ जीवन जी सकें।

प्रकृति के संरक्षण का अर्थ है कि वनों, भूमि, जल निकायों का संरक्षण और खनिजों, ईंधन, प्राकृतिक गैसों आदि जैसे संसाधनों का संरक्षण, यह सुनिश्चित करने के लिए कि ये सभी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहें। ऐसे कई तरीके हैं जिनसे आम आदमी प्रकृति के संरक्षण में मदद कर सकता है। इनमें से कुछ ऐसे हैं जो आसानी से किए जा सकते हैं और एक बहुत बड़ा बदलाव ला सकते हैं। प्रकृति हमें पानी, भूमि, सूर्य का प्रकाश और पेड़-पौधे प्रदान करके हमारी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करती है। इन संसाधनों का उपयोग विभिन्न चीजों के निर्माण के लिए किया जा सकता है जो निश्चित ही मनुष्य के जीवन को अधिक सुविधाजनक और आरामदायक बनाते हैं। प्रकृति के संरक्षण से अभिप्राय जंगलों, भूमि, जल निकायों की सुरक्षा से है तथा प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण खनिजों, ईंधन, प्राकृतिक गैसों जैसे संसाधनों की सुरक्षा से है जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि ये सब प्रचुर मात्रा में मनुष्य के उपयोग के लिए उपलब्ध रहें।

ऐसे कई तरीके हैं जिससे आम आदमी प्रकृति के संरक्षण में मदद कर सकता है। यहां कुछ ऐस ही तरीकों का विस्तृत वर्णन किया गया है जिससे मानव जीवन को बड़ा लाभ हो सकता है।

पृथ्वी के पास हर इंसान की जरूरत पूरी करने के लिए काफी कुछ है, लेकिन उसके लालच को पूरा करने के लिए नहीं हैं। पृथ्वी पर पानी, हवा, मिट्टी, खनिज, पेड़, जानवर, पौधे आदि हर किस्म की जरूरत के लिए संसाधन है। लेकिन औद्योगिक विकास की होड़ में हम पृथ्वी को सफाई और उसके ही स्वास्थ्य को नजरअंदाज करने लगे हैं। हम कुछ भी करने से पहले यह बिलकुल नहीं सोचते कि हमारी उस गतिविधि से प्रकृति को कितना नकुसान होगा। प्रकृति का संरक्षण प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से सबंधित है। इनमें मुख्यत: पानी, धूप, वातावरण, खनिज, भूमि, वनस्पति और जानवर शामिल हैं। प्रकृति हमें पानी, भूमि, सूर्य का प्रकाश और पेड़-पौधे प्रदान करके हमारी बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करती है। इन संसाधनों का उपयोग विभिन्न चीजों के निर्माण के लिए किया जा सकता है जो निश्चित ही मनुष्य के जीवन को अधिक सुविधाजनक और आरामदायक बनाते हैं।

धरती के वातावरण के गर्म होने का मुख्य कारण का ग्रीनहाउस गैसों के स्तर में वृद्धि है। इसे लगातार नजरअंदाज किया जा रहा है जिससे प्रकृति पर खतरा बढ़ता जा रहा है। ये आपदाएँ पृथ्वी पर ऐसे ही होती रहीं तो वह दिन दूर नहीं जब पृथ्वी से जीव-जन्तु व वनस्पति का अस्तिव ही समाप्त हो जाएगा। कहते है प्रकृति संरक्षित होगी तो मानव जीवन भी सुरक्षित होगा। प्रकृति हमारी धरोहर है, इसकी रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य है।

प्रकृति से हमारा तात्पर्य जल, जंगल और जमीन से है। हम लगातार प्रकृति का दोहन करते जा रहे हैं जिससे मानव जीवन संकट में पड़ गया है। जल, जंगल और जमीन के बिना प्रकृति अधूरी है। जल को व्यर्थ में बहा रहे हैं जंगलों को काट रहे हैं और जमीन पर जहरीले कीटनाशक का उपयोग करके उसकी उर्वरक क्षमता और उपजाऊ शक्ति को कमजोर कर रहे हैं। हम एक अर्से से प्रकृति दिवस मना रहे हैं और लोगों को प्रकृति संरक्षण का संदेश दे रहे हैं। लेकिन इसके बावजूद प्रकृति पर मंडराता खतरा जस का तस बना हुआ है। सबसे बड़ा खतरा तो इसे ग्लोबल वार्मिंग से है। धरती के तापमान में लगातार बढ़ते स्तर को ग्लोबल वार्मिंग कहते है। वर्तमान में ये पूरे विश्व के समक्ष बड़ी समस्या के रुप में उभर रहा है। ऐसा माना जा रहा है कि धरती के वातावरण के गर्म होने का मुख्य कारण का ग्रीनहाउस गैसों के स्तर में वृद्धि है। इसे लगातार नजरअंदाज किया जा रहा है जिससे प्रकृति पर खतरा बढ़ता जा रहा है। ये आपदाएँ पृथ्वी पर ऐसे ही होती रहीं तो वह दिन दूर नहीं जब पृथ्वी से जीव-जन्तु व वनस्पति का अस्तिव ही समाप्त हो जाएगा। कहते है प्रकृति संरक्षित होगी तो मानव जीवन भी सुरक्षित होगा। प्रकृति हमारी धरोहर है, इसकी रक्षा करना हमारा कर्त्तव्य है। प्रकृति ने हमें जीव-जंतुओं सहित सूर्य, चाँद, हवा, जल, धरती, नदियां, पहाड़, हरे-भरे वन और खनिज सम्पदा धरोहर के रूप में दी हैं। मनुष्य अपने निहित स्वार्थ के कारण प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग कर रहा है। बढ़ती आबादी की समस्या के लिए आवास समस्या को हल करने के लिए हरे-भरे जंगलों को काट कर ऊंची-ऊंची इमारतें बनाई जा रही हैं। वृक्षों के कटने से वातावरण का संतुलन बिगड़ गया है और ग्लोबल वार्मिंग की समस्या पूरे विश्व के सामने भयंकर रूप से खड़ी है। खनिज-सम्पदा का अंधाधुंध प्रयोग किया जा रहा है। जीव-जंतुओं का संहार किया जा रहा है, जिसके कारण अनेक दुर्लभ प्रजातियां लुप्त होती जा रही हैं।

हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम पृथ्वी और उसके वातावरण को बचाने का प्रयास करेंगे। हम पर्यावरण के प्रति न सिर्फ जागरूक हो बल्कि उसके लिए कुछ करें भी। प्रकृति को संकट से बचाने के लिए स्वयं अपनी ओर से हमें शुरूआत करनी चाहिए। पानी को नष्ट होने से बचाना चाहिए। वृक्षारोपण को बढ़ावा देना चाहिए। अपने परिवेश को साफ-स्वच्छ रखना चाहिए। प्रकृति के सभी तत्वों को संरक्षण देने का संकल्प लेना चाहिए।

–अतिथि संपादक,
बाल मुकुन्द ओझा
वरिष्ठ लेखक एवं पत्रकार

विश्व पटल पर अवतरित होते नए मसीहा

डॉ रामावतार शर्मा

धरती पर 2009 में एक सपना बांटा गया था कि पांच देश मिलकर एक नया संसार रचेंगे जिसमें विकास की निरंतरता को मजबूत और उच्च स्तर का किया जाएगा, वैश्विक सुरक्षा को मजबूत किया जाएगा, विकास, शांति और सहयोग को नए आयाम दिए जाएंगे। ब्राजील के लूला दा सिल्वा, रूस के मेदवेदेव, इंडिया के मनमोहन सिंह और चीन के हु जिंताओ ने पहली बार ब्रिक्स नामक इस सपने को जन्म दिया जिसमें कुछ समय बाद जैकब जुमा के नेतृत्व में दक्षिण अफ्रीका भी शामिल हुआ। प्रारंभिक एक दो वर्षों के लिए ऐसा प्रचारित किया गया कि विश्व अब अपने एकमात्र केंद्र अमेरिका से हट कर द्विकेंद्रीय हो जायेगा और शंघाई का ब्रिक्स मुख्यालय वॉशिंगटन डीसी को प्रतिस्पर्धा देने लगेगा।

लेकिन हुआ क्या? ब्राजील के लूला भ्रष्टाचार के एक मामले में जेल यात्रा कर आए और उनके स्थान पर आए विपक्ष के नेता जैर बालसेनारो ने राष्ट्रपति पद की गरिमा को तहस नहस कर दिया तथा ब्राजील की अर्थव्यवस्था पैंदे पर चली गई। रूस के मेदवेदेव पूर्व राष्ट्रपति और उस समय के प्रधानमंत्री पुतिन के काष्ठ पुतले निकले। इंडिया के मनमोहन सिंह न तो चुने हुए नेता थे और न ही उनका कोई जनाधार था। शक्तिशाली विपक्ष ने भ्रष्टाचार के कुछ सच्चे और कई झूठे मामले बना कर उन्हे पराजित कर डाला। उधर चीन में हु जिंताओं के सबसे प्रिय शिष्य शि जिन पिंग ने अपने गुरु को अपमानित करके राजनीति के अंधकार में धकेल दिया।

दक्षिण अफ्रीका के जैकब जुमा ने गुप्ता बंधुओं के साथ मिलकर अरबों रैंड का घोटाला किया जिसके कारण उसने अपनी प्रतिष्ठा और पद दोनों गंवा दिए। ब्रिक्स हो या जी 20 या फिर कोप ये सब कुछ विश्व के नेताओं की पिकनिक बन कर रह गए हैं। आम लोगों को इन तथाकथित शिखर सम्मेलनों से दिशा या दर्शन कुछ भी नहीं मिला है। अपने 13 वर्ष के अस्तित्व में ब्रिक्स सम्मेलनों की कुछ भी उपलब्धि नहीं है। भारत और चीन के संबंध इसका सबसे बड़ा उदाहरण हैं। मात्र पांच सदस्यों का यह संगठन इन दोनों देशों को पास नहीं ला पाया।

दोनों देशों का नेतृत्व एवम् जनता एक दूसरे से उतने ही दूर हैं जितने 1965 में थे। रूस से तो उल्टे भारत की दूरियां और बढ़ गई हैं। ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका से तो एक सामान्य भारतीय पूरी तरह से अनभिज्ञ है। इस तरह से अपने आज तक के जीवन काल में ब्रिक्स पूर्ण रूप से असफल प्रयास है। भाईचारे, सहयोग, स्थिरता एवं संयुक्त प्रयासों की बातें सम्मेलन के आखिरी दिन के घोषणा पत्र तक सिमट कर एक दिन फाइलरूपी डस्टबिन में समा जाती हैं।

अब जरा ब्रिक्स के नए रूप को देखा जाए जिसमें संगठन को इस वर्ष विस्तार देकर कुछ अन्य देशों को जोड़ा गया है परंतु पहले इसके प्रारंभिक पांच सदस्यों की वस्तुस्थिति पर भी नजर डाल ली जानी चाहिए। बोल्सेनारो को पराजित कर लुला फिर ब्राजील के राष्ट्रपति बने हैं पर देश पूरी तरह से दो गुटों में विभक्त है और अस्थिर भी है तथा आर्थिक रूप से दिवालिया होने के कगार पर है।

रूस पर पुतिन ने पूर्ण एकाधिकार कर लिया, उसे यूक्रेन के साथ युद्ध में झोंक कर पूरे देश पर अपनी मनमर्जी स्थापित कर रखी है। यह देश भी आर्थिक और राजनीतिक स्तर पर अस्थिर है। इंडिया को देखा जाए तो यह भी धर्म, जाति, भाषा और संप्रदायों के रूप में आंतरिक विभाजन के नए दौर में प्रवेश कर चुका, चंद बड़े व्यापारिक घरानों ने देश की नब्बे प्रतिशत संपदा अपनी मुट्ठी में कर ली है तथा संवैधानिक संस्थाएं दम तोड़ती नजर आ रही हैं और सरकार की संस्थाओं का राजनीतिक दुरुपयोग निस्संकोच हो रहा है। साउथ अफ्रीका में राष्ट्रपति रामाफोसा एक दिशाहीन सरकार का नेतृत्व करते नजर आ रहे हैं।

इस वर्ष के ब्रिक्स सम्मेलन में जो कुछ नए देश जुड़े हैं उन पर नजर डालना रोचक हो सकता है। अर्जेंटीना, इजिप्ट, ईरान, साउदी अरब, यूनाइटेड अरब अमीरात और इथियोपिया आदि सभी देश इस समय डिक्टेटर्स द्वारा नियंत्रित हैं। इस तरह से देखा जाय तो ब्रिक्स एकाधिकारवादी मानसिकता का एक झुंड बन कर जनधन बर्बाद करने वाली एक संस्था का रूप लेकर रह गई है जिसमें अधिकतर सदस्यों का आपसी संपर्क नगण्य-सा है। आपसी सहयोग की बातें किसी दिवास्वप्न के अलावा कुछ नहीं है। सुनहरे भविष्य के सपने बांटते ये एकाधिकारवादी लोग अपने अपने देश में लोकतंत्र की नींव को हिला रहे हैं पर बाहरी तौर पर भाईचारे एवम् सहयोग का आडंबर खड़ा कर अपने व्यक्तिगत स्वार्थ की सिद्धि कर रहे हैं। दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति रामाफोसा इसके उदाहरण हैं।

ब्रिक्स सम्मेलन रोटेशन द्वारा मिलनेवाली जिम्मेदारी है परंतु रामाफोसा का टेलीविजन मीडिया इसे एक राष्ट्रीय उपलब्धि के रूप में पेश कर रहा था। राजधानी की हर सड़क पर रामाफोसा के विशाल कटआउट लगे पड़े थे जो यह प्रदर्शित कर रहे थे कि रामाफोसा ने पूरी दुनिया अपनी मुट्ठी में कर ली है और दक्षिण अफ्रीका के लिए वे नए मसीहा हैं जो देश की मृतप्राय अर्थव्यवस्था में जीवन फूंक कर लोगों के लिए अच्छे दिन ला देंगे। सम्मेलन स्थल से कोसों दूरी पर किसी बस स्टैंड या रेल स्टेशन पर राष्ट्रपति के भीमकाय पोस्टर अन्य राष्ट्राध्यक्षों का स्वागत करते नजर आ रहे थे। लोग सिर खुजलाते हुए सोच रहे थे कि भला शि जिन पिंग या नरेंद्र मोदी यहां इस स्टेशन या बस स्टैंड पर क्यों आएंगे!

रामाफोसा के लिए ब्रिक्स सम्मेलन एक साधन मात्र था जिसे द्वारा एक प्रोपेगंडा के तहत अपनी गिरती साख को संभाला जाए। वैसे देखा जाते तो ये सभी सम्मेलन इसी मनोवैज्ञानिक आधार पर खड़े किए हैं। लोग सत्य से परहेज रखते हैं और सपनों की दुनिया में जीने के आदी होते है। कमजोर वर्तमान को स्वीकार नहीं करते और अस्तित्वहीन भविष्य का तानाबाना बुनते हैं। उन्हें किसी न किसी मसीहा का इंतजार रहता है। वे इस तथ्य को कभी स्वीकार नहीं करते कि अवतार या मसीहा आते नहीं बनाए जाते हैं और यह निर्माण वृहद राजनीति का ही एक महत्वपूर्ण अंग हैं। दक्षिण अफ्रीका के प्रोपेगेंडा मीडिया पर नजर डालें तो लगने लगता है कि इक्कीसवीं सदी के मसीहा का वहां अवतरण हो गया है जिसका नाम सिरिल रामाफोसा है और अब दक्षिण अफ्रीका के अच्छे दिन आने वाले हैं।

–डॉ. रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक)

नगर परिषद की करोड़ों रूपये की बेशकीमती भूमि पर अज्ञात लोगों ने अतिक्रमण किया

बून्दी शहर के बालचंद पाडा स्थित महात्मा गांधी विद्यालय के पीछे है बेशकीमती भूमि

बून्दी, (निसं)। शहर के बालचंद पाडा स्थित महात्मा गांधी विद्यालय के पीछे नगर परिषद की करोड़ों रूपये की बेशकीमती भूमि पर अज्ञात लोगो द्वारा अतिक्रमण का मामला सामने आया है जिसके बाद नगर परिषद प्रशासन हरकत मे आया और भूमि को अपने कब्जे मे लेने के प्रयास शुरू किये है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार महात्मा गांधी विद्यालय के पीछे पुराने राष्ट्रीय राजमार्ग के किनारे पर नगर परिषद की भूमि पर गत दो चार-दिन मे अज्ञात लोगों द्वारा जेसीबी की सहायता से भूमि को समतल कर मिट्टी डलवाते हुए कब्जे का प्रयास किया जा रहा है। इसकी जानकारी जब शहर मे फैली तो जागरूक नागरिकों द्वारा बताया गया जिसके बाद नगर परिषद को उक्त अवैध अतिक्रमण की सूचना दी। शुक्रवार दोपहर नगर परिषद के अतिक्रमण दस्ते ने मौके पर जाकर देखा तो सरकारी भूमि पर अतिक्रमण होना पाया गया।

अतिक्रमियों की पंसदीदा जगह बन रहा चुगीनाका क्षेत्र : गत पांच साल में शहर का चुंगीनाका व पुराना बाईपास क्षेत्र राजनीतिक संरक्षण के चलते अतिक्रमियों की पसंदीदा जगह बन गया है। नगर परिषद की सुस्त कार्यप्रणाली और जनप्रतिनिधीयों के संरक्षण के चलते अतिक्रमी सरकारी जमीनों को भी नहीं छोड़ रहे। अतिक्रमी धार्मिक स्थानों के निर्माण का सहारा लेकर बेशकीमती जमीनों पर कब्जे कर खुद की रोटियां सेक रहे हैं।

अनिता चौहान, प्रधानाचार्य महात्मा गांधी विद्यालय, बालंचद पाडा बून्दी ने बताया कि उक्त अतिक्रमण से विद्यालय प्रशासन का कोई लेना देना नहीं है। विद्यालय के पीछे सरकारी भूमि है इस पर विद्यालय समय के बाद अतिक्रमण का कार्य किया है। इस सम्बन्ध में उच्चाधिकारियों व नगर परिषद को अवगत करवा दिया गया है।

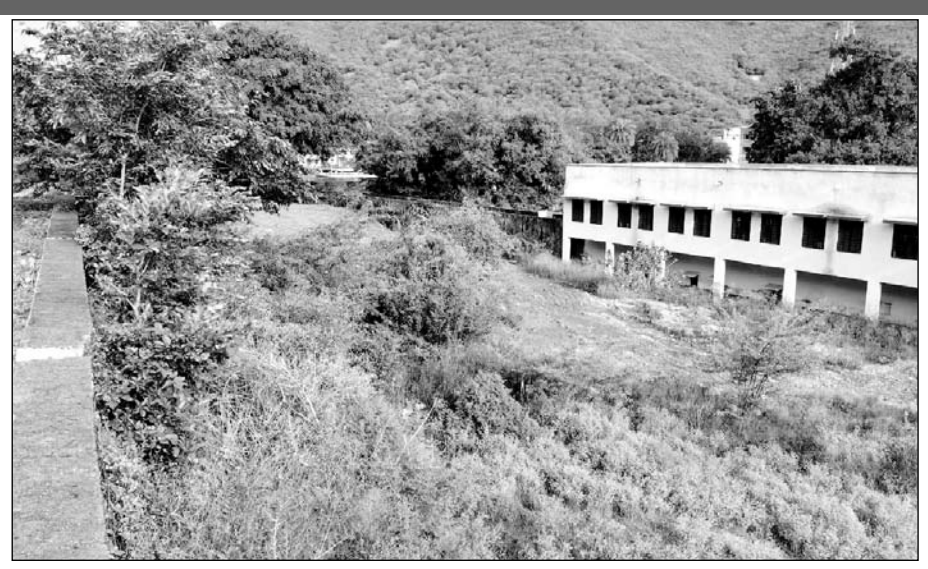

बून्दी के बालचंद पाडा स्थित महात्मा गांधी विद्यालय के पीछे नगर परिषद की बेशकीमती भूमि जिस पर अतिक्रमण का मामला सामने आया है।

- **अतिक्रमण दस्ता प्रभारी ने बताया कि नगर परिषद की भूमि पर अतिक्रमण की जानकारी सोशल मीडिया के माध्यम से मिली थी मौके पर गये थे**

रवि दाधीच अतिक्रमण दस्ता प्रभारी ने बताया कि महात्मा गांधी विद्यालय के पीछे नगर परिषद की भूमि पर अतिक्रमण की जानकारी सोशल मीडिया के माध्यम से मिली थी मौके पर गये थे। उक्त भूमि सरकारी है जिस पर अतिक्रमण का प्रयास करते हुए मिट्टी डालकर समतल करवाया गया है। जमीन को नगर परिषद अपने कब्जे में लेगी।

धोरीमन्ना में बारिश नहीं होने से फसलें चौपट

धोरीमन्ना में बारिश के अभाव में फसले चौपट हो गई।

धोरीमन्ना, (निसं)। धोरीमन्ना क्षेत्र के ग्राम पंचायत में आदर्श लुखू दानोणी देवासियों की ढाणी की बस्ती में खरीफ की फसल बाजरा, मोठ, मूंग, तिल ग्वार इत्यादि बरसात नहीं होने से पूरी तरह से फसल नष्ट हो गई है। धोरीमन्ना क्षेत्र में समय पर बरसात नहीं होने के कारण सौ प्रतिशत किसानों की फसलें नष्ट हो चुकी है। किसानों का मूल आधार खरीफ फसल का ही था।

- **सरकार से शीघ्र ही गिरदावरी करवाने की मांग की**

पशुधन गाय, भैंस, बकरी इस पर ही निर्भर रहता है। लेकिन भगवान रूठने से किसान की मेहनत 100 प्रतिशत निष्फल हो गई।

समाजसेवी सुरता राम देवासी ने बताया कि सरकार से मांग की है कि शीघ्र ही गिरदावरी करवाई जाए। जिससे किसान के खेती के अनुसार गिरदावरी करवा के अनुदान दिलवाया जाए एवं क्लेम जल्दी ही दिलवाया जाए। वहीं पशुधन की चारे की व्यवस्था की जाये। इस मौके पर ऊकाराम देवासी, किशनाराम, पूजाराम, किशन देवासी, रमेश कुमार, पनाराम इत्यादि किसान उपस्थित रहे।

सांभर में अजमेर निगम की चार बसें कोरोनाकाल से बंद

सांभरझील, (निसं)। कोरोना काल में बंद की गई राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम की सांभर से अजमेर चलने वाली चार बसें आज तक दोबारा चालू नहीं हो सकी हैं। कोरोना गाइडलाइन की अनुपालना के लिए सरकार की ओर से जारी किए गये निर्देश के बाद निगम की बसों को बंद तो करवा दिया गया लेकिन इसके बाद दोबारा सरकार इन बसों को सांभर से अजमेर व अजमेर से सांभर रूट पर चलाना ही भूल गई।

इससे सांभर से पुष्कर, अजमेर ख्वाजा साहब व अन्य कामों से जाने वालों व अजमेर से सांभर ख्वाजा साहब की दरगाह, मां शाकंभरी मंदिर, देवयानी तीर्थ स्थल, दादू दयाल की छतरी आने वाले श्रद्धालुओं व जायरिनों के अलावा पर्यटकों व आम लोगों के लिए सड़क मार्ग से यात्रा करने का अब कोई सहज सरकारी साधन उपलब्ध नहीं है। आश्चर्यजनक पहलू तो यह भी है कि सरकार के आगामी निर्देश के बाद भी जयपुर रोडवेज आगार मुख्यालय से स्वत: ही इस संबंध में कोई निर्णय नहीं लिया जा रहा है। विधानसभा स्तर के दोनों ही दलों के राजनेताओं की अनदेखी पीड़ादायक है, यानी कि यदि किसी को अजमेर जाना हो तो वह खचाखच भरी निजी जीपों में बैठकर पहले नरायना होकर दूदू जाए और फिर उसके बाद वहां से अजमेर की बस पकड़ कर अपना सफर तय करें।

जानकारी के अनुसार यहां पर कोरोना काल से पहले शाकंभरी माता मंदिर से अजमेर के लिए सुबह 7:15 बजे, किशनगढ़ रेनवाल वाया सांभर से अजमेर सुबह 8:15 बजे, डायरेक्ट सांभर से अजमेर सुबह 11:45 बजे इसके बाद दोपहर 2:30 बजे अजमेर के लिए बसें संचालित होती थी, उससे प्रतिदिन सैकड़ो मुसाफिर इसमें सफ़र कर निगम को अच्छा राजस्व भी देते थे। बताया जा रहा है कि निजी वाहन मालिकों से सांठगांठ के चलते इस रूट पर बसे नहीं चलाई जा रही है। वर्तमान में श्रीमाधोपुर से अजमेर जाने वाली रोडवेज की एक बस का टाइम सुबह करीब 11 बजे के आसपास का है लेकिन वह वापस अजमेर से सांभर कब आएगी इस बात की कोई गारंटी नहीं है।

फुलेरा विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस के वरिष्ठ नेता विद्याधर चौधरी का कहना है कि सांभर से अजमेर सुबह 8 से शाम 4 बजे तक दो-दो घंटे के अंतराल से बसों का आवागमन तथा कोरोना काल से बंद पड़ी निगम की बसों को चालू करवाने के लिए मेरी ओर परिवहन मंत्री को चिट्ठी भिजवा दी गई है, समस्या का शीघ्र समाधान होगा।

राशिफल शनिवार 16 सितम्बर, 2023

पंडित अनिल शर्मा

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, प्रतिपदा तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2080, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र प्रात: 7:36 तक, शुक्ल योग रात्रि 4:12 तक, बव करण प्रात: 9:18 तक, चन्द्रमा कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कन्या, बुध-सिंह, गुरू-मेष, शुक्र-कर्क, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज यमघट योग प्रात: 7:36 से सूर्योदय तक है। आज चन्द्र दर्शन, उत्तर श्रृंगोन्नति, नक्त व्रत पूर्ण होंगे। साम श्रावणी उपाकर्म (सामवेदियों की गरपी) है। आज से मौन व्रत आरम्भ होंगे और वीर जन्मोत्सव (जैन) है। आज प्रथम प्रकाश उत्सव गुरू ग्रंथ साहिब (प्राचीन मत से) है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:47 से 9:14 तक, चर 12:22 से 1:53 तक, लाभ-अमृत 1:53 से 4:56 तक।
राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:16, सूर्यास्त 6:28

मेष

विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। अनहोनी की आशंका से बना हुआ मन का भय समाप्त होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

सिंह

आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। व्यावसायिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को अतिरिक्त जिम्मेदारी मिल सकती है।

धनु

व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

वृष

व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

कन्या

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। संभावित धन प्राप्त होगा।

मकर

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

मिथुन

घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला

व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

कुंभ

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

कर्क

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी।

वृश्चिक

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक सफलता से मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

मीन

परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार होगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

तेंदुए ने दो लोगों पर जानलेवा हमला किया

अलवर, (निसं)। तेंदुए (लेपर्ड) ने दो लोगों पर हमला कर दिया। हमले में तेंदुए ने एक व्यक्ति का पेट फाड़ दिया, जिससे उसकी आंतें ही बाहर निकल गईं। उसको बचाने आए युवक को भी लेपर्ड ने बुरी तरह घायल कर दिया। एक घायल को जयपुर और दूसरे को कोटपूतली रेफर किया गया है।

घटना अलवर के बानसूर में रामपुर गांव में शुक्रवार सुबह 10 बजे की है। वनपाल मनोज नागा ने बताया कि रामपुर में लेकड़ी की घाटी में भैंरू बाबा मंदिर के पास सेठ्या का कुआं इलाके में लेपर्ड ने दो लोगों पर जानलेवा हमला किया है। रामपुर निवासी गिरधारी सैनी (50) सुबह भैंरू मंदिर गया था।

वह 10 बजे मंदिर से लौट रहा था। इस दौरान झाड़ियों में छुपे लेपर्ड ने उस पर अचानक हमला कर दिया। गिरधारी की चीख-पुकार सुनकर नजदीक ही खेत में काम कर रहा खोहरी निवासी महेंद्र यादव (40) पुत्र मंगलराम वहां दौड़कर पहुंचा।

- **लेपर्ड ने पंजा मारकर एक युवक का पेट फाड़ा, बाहर निकली आंतें**
- **बचाने आए युवक का भी हाथ चबाया, एक गंभीर हालत में जयपुर रैफर**

लेपर्ड को हमला करते देख महेंद्र के हाथ-पैर फूल गए। वह गिरधारी को बचाने के लिए आगे बढ़ा तो लेपर्ड ने उस पर भी हमला कर बुरी तरह जख्मी कर दिया। इसके बाद लेपर्ड घाटी की तरफ भाग गया।

हमले के गिरधारी और महेंद्र बुरी तरह जख्मी हो गए। गिरधारी का पेट फट गया, उसकी आंतें बाहर निकल गईं। दोनों लहूलुहान होकर वहीं गिर गए। कुछ देर बाद आस-पास के ग्रामीण वहां पहुंचे तो घायलों को संभाला। ग्रामीणों ने गिरधारी और महेंद्र को रामपुर सीएचसी ले गए। जहां से डॉक्टर ने उन्हें गंभीर हालत में बानसूर हॉस्पिटल रेफर कर दिया। महेंद्र यादव को बानसूर से कोटपूतली रेफर किया गया और गिरधारी सैनी की हालत गंभीर होने पर उसे जयपुर रेफर कर दिया गया।